आरम्भिक भाषा शिक्षण
बातचीत एवं चित्रों की उपयोगिता

हुमा नाज़ सिद्दीकी

आरम्भिक भाषा शिक्षण के तहत बच्चों के मौखिक भाषा विकास एवं अभिव्यक्ति को सुनिश्चित करना कक्षा-शिक्षण प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा होता है। बच्चों द्वारा यह महसूस करना कि वे कक्षा में अपनी बात रख सकते हैं, उन्हें कक्षा से, अपने साथियों और शिक्षक से जुड़ने का एहसास कराता है जो साथ-साथ सीखने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। यह लेख पहली व दूसरी कक्षा के बच्चों के साथ इस सन्दर्भ में किए गए काम के कुछ उदाहरणों को विस्तार से रखता है। सं.

अकसर बच्चों की क्षमताओं और उनके पूर्व अनुभवों को कमतर आँका जाता है, इन्हें कक्षा-शिक्षण प्रक्रियाओं में उतना स्थान नहीं दिया जाता। हम जानते हैं कि विद्यालय आने से पहले ही कम-से-कम एक भाषा पर बच्चे का अच्छा नियंत्रण होता है, एवं उस भाषा की एक स्तर की समझ भी होती है। कृष्ण कुमार अपनी किताब *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में कहते हैं कि "दुनिया का हर बच्चा, चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो, भाषा का इस्तेमाल तुरन्त कुछ उद्देश्यों के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य है दुनिया को समझना जिसकी प्राप्ति के लिए भाषा एक बेहतरीन औज़ार का काम करती है। पूर्व अनुभवों की व्याख्या करने और उन्हें पुनर्व्यवस्थित करने का काम भाषा के माध्यम से ही सम्भव है।" बच्चा शैशवावस्था से ही भाषा को एक पूरे सन्दर्भ में सुन व समझ रहा होता है इसलिए भाषा शिक्षण की शुरुआत में यह ज़रूरी होता है कि बच्चों की अपनी भाषा, उनके अनुभवों को ध्यान में रखकर भाषा शिक्षण शुरू किया जाए।

इस लेख में उल्लेखित कार्य का उद्देश्य आरम्भिक भाषा शिक्षण के तहत बच्चों के सीखने की चुनौतियों को समझना, और कविताओं एवं चित्रों के माध्यम से मौखिक भाषा के विकास को समझना है। यह कार्य बेमेतरा ज़िले की एक शासकीय प्राथमिक शाला में पहली व दूसरी कक्षा के 21 बच्चों के साथ किया गया। इस काम के दौरान कक्षा पहली की पाठ्यपुस्तक के अलावा बाल साहित्य की कुछ किताबों, कविता चार्ट, कविता पट्टियों का इस्तेमाल किया गया।

भाषा सीखने-सिखाने की चुनौतियों को समझना

कई बार यह शिकायत होती है कि दूसरी कक्षा के अन्त तक भी बच्चे पढ़ नहीं पाते, बोलते नहीं हैं, बच्चों को कुछ नहीं आता, आदि। स्कूल में शिक्षक साथियों के साथ भाषा शिक्षण पर कार्य करने के दौरान भी बताया जाता है कि कुछ बच्चे बोलते ही नहीं हैं, अपनी बात कहने से कतराते हैं। इन चुनौतियों को समझने के लिए शुरुआत कक्षा-शिक्षण के अवलोकन से हुई और फिर बच्चों से सामान्य बातचीत भी की गई, जैसे– उनके घर, परिवार, गाँव के बारे में जानना आदि। जैसा कि ऊपर कहा गया है सीखने-सिखाने का यह काम कक्षा एक व कक्षा दो के मिश्रित समूह के साथ किया गया। कक्षा-शिक्षण अवलोकन के दौरान शिक्षण प्रक्रिया के कुछ उदाहरण इस प्रकार रहे :

उदाहरण 1. कक्षा में बच्चों को वर्णों के बारे में पढ़ाया जा रहा था। शिक्षिका ने कुछ वर्णों को ब्लैकबोर्ड में लिखा और उन्हें पढ़कर बच्चों को बताने लगीं। शिक्षिका ने लिखा– ख, र, क, म...। खरगोश का 'ख', रस्सी का 'र', कलम का 'क', मछली का 'म'। इस प्रकार इन वर्णों को पढ़ाने के बाद शिक्षिका ने बच्चों से पूछा भी और बच्चे सीखे या नहीं, यह आकलन करना चाहा। कुछ बच्चों ने वर्णों को पहचाना तो कुछ ने नहीं। जिन बच्चों ने नहीं पहचाना उन्होंने दूसरे बच्चों की हाँ में हाँ मिलाते उनकी राह पकड़ ली। पढ़ने-पढ़ाने का ये दौर इसी प्रकार कुछ और वर्णों के साथ भी चला।

उदाहरण 2. शिक्षिका दो अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना बता रही थीं। जैसे– आ + म = आम, ला + ल = लाल। शिक्षिका ने बच्चों को नए बने शब्दों को कॉपी में लिखने को कहा। साथ ही वे एक स्टिक से अक्षरों को दोहराकर बच्चों को बता रही थीं। कुछ बच्चे ही अक्षरों को पहचान पा रहे थे। शिक्षिका के दोहराने से कुछ बच्चे अक्षरों की ध्वनियों को जोड़कर नया शब्द बोल पा रहे थे। शिक्षिका ने सभी अक्षरों को दोहराकर पढ़वाया फिर बच्चों से भी आकर पढ़ने को कहा। कक्षा दूसरी के ज़्यादातर बच्चे अक्षरों को पहचानकर पढ़ पा रहे थे पर पढ़ना उसी तरह था– आम का 'आ' और मछली का 'म', आम। कक्षा पहली का कोई भी बच्चा सम्पूर्ण रूप से पढ़ने एवं कहने में असमर्थ था, इसीलिए बच्चे शायद खुलकर अभिव्यक्त भी नहीं कर रहे थे।

उदाहरण 3. सभी बच्चों के लिखने-पढ़ने की दक्षता पर भी शिक्षिका से चर्चा हुई। शिक्षिका का कहना था दूसरी के सभी 13 बच्चे पढ़ और लिख लेते हैं जबकि पहली के एक-दो बच्चे ही अपना नाम लिख और पढ़ पाते हैं। शिक्षिका ने कुछ बच्चों को बुलाकर बोर्ड पर नाम लिखने को कहा। दूसरी कक्षा के 4 बच्चों ने अपना नाम सही लिखा, मगर जब उन्हीं बच्चों को दूसरे का नाम लिखने को कहा गया तो बच्चों ने बिना कोई मात्रा लगाए अक्षरों को जोड़कर लिखने का प्रयास किया। उनका स्तर समझने के लिए हमने 'एक कहानी कहनी है' इस कविता की कुछ पंक्तियाँ बोर्ड पर लिखीं और उन्हें बच्चों को पढ़ने के लिए कहा। लगभग सभी बच्चे स्वतंत्र रूप से इस कविता को पढ़ने में असमर्थ थे, दूसरी के तीन बच्चे वाक्य के कुछ शब्द, जैसे– आम, दिन, आदि पढ़ पाए। पहली के बच्चे पढ़ने में असमर्थ थे। दो बच्चियाँ बिलकुल शान्त थीं और सामने बुलाए जाने पर झिझक रखते हुए उन्होंने न बोलने का फ़ैसला किया।

उदाहरण 4. बच्चों के सीखने में एक और चुनौती थी– उनकी अपनी भाषा। छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी बोली जाती है, यही बच्चों की परिवेशीय भाषा है। लेकिन कक्षा में सीधे हिन्दी भाषा से परिचित कराया जा रहा था। कक्षा अवलोकन के दौरान यह बात भी समझ में आई कि हिन्दी भाषा के कुछ शब्द जो बच्चों को बताए जा रहे होते हैं उनकी अपनी भाषा या फिर बोलचाल की भाषा में बच्चे उनसे अलग बोल रहे होते हैं, जैसे– आम को आमा, लड़की को टुरी या नोनी, तालाब को तरिया आदि (छत्तीसगढ़ी भाषा)। यह भी एक वजह है कि बहुत-से बच्चे अपनी बात खुलकर नहीं रख पाते भले ही वह अपनी भाषा व परिवेश में स्वतंत्र रूप से बोल व सुन रहे होते हैं।

अवलोकन के बाद कक्षा प्रक्रियाओं के अवलोकन के आधार पर मैंने शिक्षिका से बातचीत की। इसमें भाषा शिक्षण के तरीक़े और उन तरीक़ों से सम्बन्धित चुनौतियों व कुछ ख़ास सवालों, जैसे– बच्चों की कक्षा में मौखिक अभिव्यक्ति कितनी है? बच्चे क्या सुनी गई बातों पर स्वतंत्र रूप से अपनी बात कह पाते हैं? कक्षा में बच्चों को छत्तीसगढ़ी भाषा में कहने सुनने के कितने मौक़े उपलब्ध हैं? बच्चों के मौखिक भाषा विकास के लिए क्या शिक्षण प्रक्रियाएँ हो सकती हैं?, आदि पर चर्चा की गई।

उपरोक्त उदाहरणों का सन्दर्भ रखते हुए हमने 20 दिन की एक कार्य योजना बनाई।

इस योजना में शिक्षण हेतु बच्चों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए बातचीत, बच्चों के अपने अनुभवों को साझा करना, विभिन्न कविताओं को पहले सन्दर्भ और फिर कविता पोस्टर के साथ पढ़ना, कहानी सुनना, किताबों, चित्रों पर राय देना शामिल किया गया।

कार्य की शुरुआत एवं कक्षा में बातचीत

कक्षा में सभी बच्चों की भागीदारी एवं अभिव्यक्ति को सुनिश्चित करने के लिए पहला काम बच्चों को बातचीत के मौक़े उपलब्ध कराने पर किया गया। 20 दिन में पहला हफ़्ता कक्षा में बच्चों के साथ सिर्फ़ बातचीत का रखा गया। इसमें बच्चों को सुनी या देखी गई बातों या घटनाओं को व्यक्त करना, अपने घर, परिवार, स्कूल और परिवेश के बारे में बताना था। सभी बच्चों को अलग-अलग विषयों के तहत (तालिका 1) सबके सामने अपनी बात रखनी थी साथ ही उससे जुड़े अपने निजी अनुभव साझा करने थे।



चित्र 1 : बाल साहित्य की किताबों और चित्रों पर बात



चित्र 2 : बाल साहित्य की किताबों और चित्रों पर बात



चित्र 3 : बातचीत एवं अनुभवों को साझा करना

बातचीत का हफ़्ता

ऐसा नहीं था कि सभी बच्चे झट-पट बोलने लगे। कुछ बच्चे जो पहले से बोलते थे शुरुआत उनके साथ ही हुई जिससे अन्य बच्चों ने धीरे-धीरे सामने आकर अपनी बात रखना शुरू किया। उनसे कुछ मन से करने को कहा तो जैसा अमूमन होता है वे झिझकते हैं मगर धीरे-धीरे बच्चे खुले। तुमको क्या पसन्द है तो बच्चों ने कहा गाना गाना। हमने पहले उनसे गाना गाने को ही कहा। बच्चों ने हिन्दी, छत्तीसगढ़ी फ़िल्मों के गाने सुनाए, कुछ सुवा

तालिका 1 : बातचीत के विषय एवं बच्चों की उपस्थिति

दिन	बातचीत का विषय	उपस्थिति
पहला	अपने बारे में बताना	18
दूसरा	त्योहार पर बातचीत	19
तीसरा	मनपसन्द खेल	17
चौथा	अगर हम उड़ पाते?	20
पाँचवाँ	किताबों के चित्रों पर बातचीत	20
छठवाँ	चित्रों पर बातचीत	19

गीत जैसे पारम्परिक गीत भी सुनाए। हमारा ऐसा करना बच्चों को बिना झिझक खुलकर अभिव्यक्त करने में मददगार तो रहा ही, साथ ही उन्हें मज़ा भी आया और उनमें आत्मविश्वास भी जागा। इस गतिविधि ने बच्चों को बाद में बाक़ी अन्य विषयों पर भी बोलने में मदद की, जैसे– बच्चों ने पोला, हरेली जैसे परिवेशीय त्योहारों एवं बाल साहित्य की किताबों के चित्रों के आधार पर अन्दाज़े से कहानियाँ भी सुनाईं। इस पूरी प्रक्रिया में यह देखा गया कि बच्चे धीरे ही सही, मगर कुछ समय बाद अपने विचार रख रहे थे। बच्चे भले ही पढ़ना नहीं जानते थे किन्तु मौखिक रूप से अपनी बात कह रहे थे, एक दूसरे के साथ विचार साझा कर रहे थे जो भाषा शिक्षण का एक अहम उद्देश्य है।

चित्र बनाना एवं अभिव्यक्त करना

बातचीत के हफ़्ते के बाद अब बच्चों को उनकी ही मौखिक भाषा के लिखित स्वरूप से अवगत कराने पर कार्य किया गया जिसके लिए लगभग पन्द्रह दिनों की कार्य योजना शिक्षिका से साझा की गई, शुरुआत के दो से तीन दिन उन्हें मनपसन्द चित्र बनाने को कहा गया, बच्चों के चित्र बहुत कुछ कहते हैं और बच्चे ख़ुद भी चित्रों को पढ़ते हैं एवं उसके अनुरूप अपने विचार गढ़ते हैं। यह कार्य बच्चों को समझाने में मददगार था कि उनके विचारों को काग़ज़ में चित्रों के माध्यम से दूसरों को बताया भी जा सकता है, जैसे– बच्चों ने बातचीत के दौरान अपने-अपने गाँव के बारे में बताया और चित्रों के माध्यम से भी व्यक्त किया।

बच्चों को अपने मन मुताबिक़ चित्र बनाने की पूरी स्वतंत्रता दी गई। शुरुआत में उन्हें कुछ सुझाव दिए गए कि अपने गाँव से सम्बन्धित किसी भी चीज़, घटना या वह कुछ बनाएँ जो तुम्हारा मन करे। इस तरह पहले दिन बच्चों ने अपने गाँव, दूसरे दिन अपनी मनपसन्द कहानी का चित्र बनाकर उसे सबके साथ साझा किया। दोनों ही दिन कक्षा के सभी बच्चे उपस्थित रहे। यह बात समझना ज़रूरी है कि ऐसे किसी



चित्र 4 : अनुभव एवं कहानी आधारित चित्र बनाना

भी कार्य को बच्चों के साथ करने के लिए उन्हें अपनत्व के साथ प्रोत्साहित करने की आवश्यकता सबसे अहम है। शुरुआत में कई बच्चे कहते हैं, हम चित्र नहीं बना पाएँगे या फिर हमें आता नहीं। इसका मूल कारण, जो मुझे लगता है, उनकी कलाकृतियों को वयस्कों की समझ के पैमाने से देखा जाना है जिसे बच्चे भली-भाँति महसूस करते हैं। इस विचार का बनना ही बच्चों में उनसे बड़ों की तुलना होने या उनके समक्ष हास्य का पात्र बनने जैसी मानसिकता को पैदा करता है और बच्चे खुलकर अभिव्यक्त करने में संकोच करने लगते हैं। लेकिन बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए तो वे भी कोशिश करते हैं। बच्चों को स्वतंत्र रूप से अपनी कलाकृतियाँ रखने को कहा गया और शिक्षिका व मैंने ख़ुद भी भागीदारी की और अपने बनाए चित्रों को बच्चों के साथ साझा किया। (चित्र 4, 5)

कविता सुनाना, गाना और कविता चार्ट के साथ काम

सबसे पहले उनकी स्थानीय कविताओं को हाव-भाव के साथ गाया गया। बच्चों ने स्थानीय गीत सुनाए। मौखिक रूप से कविताओं को बोलने के बाद कविताओं के लिखित स्वरूप से परिचित कराया गया। हाव-भाव के साथ कविताएँ सुनाने, पोस्टर से बच्चों को कविता पढ़ाने एवं ध्वनियों और शब्दों का तालमेल बताने का कार्य करने के बाद बच्चों को ख़ुद पोस्टर से पढ़ने के लिए कहा गया। चित्रों के बाद बच्चों

को भाषा की संरचना यानी मौखिक भाषा के लिखित रूप से अवगत करने का काम किया गया जिसमें लगभग सप्ताहभर कविता चार्ट



चित्र 5 : अपने बनाए चित्रों को अभिव्यक्त करते बच्चे

पठन, कविताओं में आए मिलते-जुलते शब्दों पर काम, कविता में आने वाले समान शब्दों की पहचान पर कार्य हुआ। जब बच्चे कविता चार्ट के माध्यम से अन्दाज़ा लगाकर पढ़ पा रहे थे उसके बाद अगला कार्य तीन से चार दिन कविता पट्टी के साथ किया गया जिससे बच्चे स्वयं पढ़ी जा रही कविताओं की वाक्य संरचना को समझ सकें एवं शब्दों, उनकी लिखावट और अर्थ को जोड़कर पढ़ना कर सकें। (चित्र 7, 8)



चित्र 6 : बच्चों द्वारा स्थानीय गीत–कविता सुनाना



चित्र 7 : वाक्यों को समझकर क्रम से जमाना व शब्दों की पहचान करना

बच्चों का सीखना एवं कार्य का विश्लेषण

इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण था सीखने-सिखाने के विभिन्न अवसरों के साथ बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझना।

शिक्षण प्रक्रिया में थोड़े-से बदलाव, जैसे— पाठ्यपुस्तक के साथ अन्य बाल साहित्य को शामिल करने, बच्चों को उनके निजी एवं परिवेश से जुड़े अनुभवों को साझा करने व स्वतंत्र अभिव्यक्ति के मौक़े देने से सभी बच्चों ने अपनी भागीदारी दी और विषयों पर अपनी बात साझा की। शुरुआत में कुछ बच्चे नहीं बोले, लेकिन अन्य बच्चों को देखकर कुछ दिनों बाद उन्होंने अपने अनुभव भी साझा किए। इसी तरह चित्र बनाने को लेकर शुरू में कुछ बच्चों ने इंकार किया। चित्र बनाने को लेकर उनपर दबाव नहीं डाला गया, लेकिन दूसरे बच्चों की देखा-देखी अगले ही दिन उन बच्चों ने भी चित्र बनाए। शिक्षिका से इसपर भी बात हुई कि बच्चों को कभी-कभी स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए किन्तु उन्हें प्रक्रिया से बाहर नहीं रखना चाहिए। बच्चे कुछ देर से ही सही, अन्य बच्चों को देखकर भी भाग लेना शुरू कर देते हैं। सभी बच्चों ने विभिन्न चित्र बनाए एवं अपनी प्रतिक्रियाएँ भी साझा कीं। बच्चों के चित्र शायद उस नज़रिए से सटीक न बैठें जिससे वयस्क उन्हें देखते हैं,

लेकिन उनके सभी चित्रों के मायने एवं उनसे जुड़े अपने अनुभव थे। टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों का भी सार्थक अर्थ था जिसे स्वतंत्र रूप से साझा करने के प्रोत्साहन से प्रत्येक बच्चे ने खुलकर अपने विचार अभिव्यक्त किए। बच्चों की अभिव्यक्ति धीरे-धीरे ही बढ़ी।



चित्र 8 : अनुमान लगाकर पढ़ना

बातचीत और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के मौक़ों ने बच्चों के आत्मविश्वास के साथ ही अभिव्यक्ति का स्तर भी बढ़ाया, जैसे– एक कहानी को चित्र के माध्यम से व्यक्त करना, कक्षा दूसरी के एक बच्चे ने ख़रगोश और कछुए की कहानी को रोचक चित्र के माध्यम से दर्शाया तो कुछ ने किताबों के चित्र के माध्यम से पूरी कहानी बनाई। (चित्र 3, 5)

कविताओं को पोस्टर के माध्यम से आगे आकर पढ़ने में भी जो बच्चे पहले झिझक रहे थे उन्होंने धीरे-धीरे सामने आकर पढ़ने की कोशिश की। हाँ, सभी बच्चे पूरी तरह समझकर पढ़ पाने में अभी असमर्थ थे मगर भाग लेकर सभी बच्चों ने जो शुरुआत की वो अहम थी। बच्चे अनुमान से पढ़ना शुरू कर रहे थे। कुछ शब्दों और उनकी लिखावट, अक्षर और ध्वनि को पहचान पा रहे थे, जैसे– टहनी, आम, टोकरी। बच्चे बोलने के साथ पढ़ने में वाक्यों के क्रम, शब्दों की पहचान कर पा रहे थे। शिक्षिका से बच्चों के इस तरह सीखने पर बात हुई कि शिक्षण में बातचीत करने जैसी गतिविधि शामिल करने से सभी बच्चों को अपनी बात कहने का मौक़ा मिलता है। शिक्षिका ने माना भी कि बातचीत और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के मौक़ों ने कक्षा के सभी बच्चों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

शिक्षण का सार्थक होना

अगर आप सम्पूर्ण प्रक्रिया को देखें तो यह कोई अलग या अनूठी प्रक्रिया नहीं थी। बस हम जो तरीक़े अपनाते हैं शिक्षण के उन्हीं तरीक़ों को बच्चों के लिए सहज करते हुए पहले उन्हें अपनी बात कहने, अनुभवों को रखने के मौक़े उपलब्ध कराए गए जो किसी भी कक्षा में बच्चों की मौखिक भाषा विकास में कारगर हैं। भाषा हम सभी के लिए अपने विचारों को व्यक्त करने का एक सहज माध्यम होता है। एक बच्चा सबसे पहले अपनी परिवेशीय भाषा बोलना शुरू करता है इसलिए शिक्षण प्रक्रिया में बातचीत एवं उसके अपने अनुभवों को साझा करने को स्थान दिया जाना चाहिए। उल्लेखित शिक्षण प्रक्रियाएँ बच्चों को सीखने के मौक़े देने एवं समझ के साथ सीखने में कारगर थीं। बातचीत, जिसे सामान्य प्रक्रिया मान लिया जाता है, कक्षा में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने का एक बेहतर माध्यम हो सकती है जिसके द्वारा सीखने और सीखी हुई बातों को सुदृढ़ बनाने का काम बहुत अच्छे से किया जा सकता है। परन्तु वास्तविकता यह है कि हमारी प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों से खुलेपन से बातचीत करना या बच्चों को बातचीत का माहौल देना बहुत ही कम दिखाई पड़ता है। ऐसे में बच्चे का अपना भाषा ज्ञान एक नई भाषा में उसके प्रवेश को कैसे सुगम बना सकता है, इस ओर ध्यान नहीं दिए जाने से उसे नई भाषा सीखने में मातृभाषा के प्रयोग का अवसर नहीं मिलता और सीखने की प्रक्रिया ज़्यादा जटिल हो जाती है। जैसा आप देख सकते हैं, बच्चों को आरम्भिक स्तर पर बेहतर समझाने और अभिव्यक्ति के लिए बातचीत के साथ चित्र एक बड़ा माध्यम होता है। चित्रों के

माध्यम से बच्चे शब्दों और पूर्ण वाक्यों में अपनी बात रखते हैं। बच्चों के सीखने को देखते हुए यह कहना सार्थक है कि आरम्भिक स्तर पर उन्हें मौखिक अभिव्यक्ति के ज़्यादा-से-ज़्यादा मौक़े दिए जाएँ तो कक्षा में सभी बच्चों की भागीदारी, उनका खुलकर अपनी बात रखना, चर्चा में अनुभव साझा करना, आदि सुनिश्चित किया जा सकता है। इससे शिक्षिका की यह भ्रान्ति भी दूर हुई कि कुछ बच्चे कमज़ोर होते हैं इसलिए नहीं बोलते। दोष असल में बच्चों का नहीं होता, उनको दिए जा रहे अवसरों की कमी और हमारी ख़ुद की शिक्षण प्रक्रिया इसके लिए कहीं ज़्यादा ज़िम्मेदार है जिसमें आमूलचूल बदलाव और एक बेहतर प्रयास प्रत्येक बच्चे को सीखने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

सभी चित्र : हुमा नाज़ सिद्दीकी

हुमा नाज़ सिद्दीकी सात सालों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं। आपने रुंगटा कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, भिलाई में सहायक प्रोफ़ेसर के रूप में विद्यार्थियों को बायोटेक्नोलॉजी पढ़ाया है। विज्ञान लेख लिखती हैं और कई शोध पत्र भी लिखे हैं। तीन साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में विज्ञान, भाषा और गणित विषय में काम कर रही हैं।

सम्पर्क : huma.siddiqui@azimpremjifoundation.org